पुस्तक समीक्षा

श्योरली यू आर जोकिंग, मि. फाइनमैन! ऐडवैन्चर्स ऑफ ए क्यूरियस कैरेक्टर

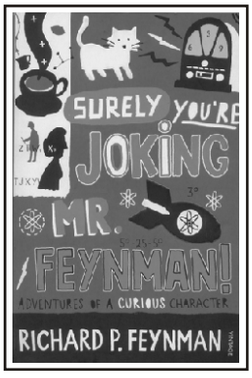

लेखक रिचर्ड पी फाइनमैन
विन्टेज बुक्स, लन्दन (1992) : 350 पृष्ठ भाषा–अंग्रेज़ी

समीक्षा : नीरजा राघवन

क्या आप यह उम्मीद करेंगे कि एक किशोर वैज्ञानिक अपनी प्रयोगशाला में आलू तलने से कुछ ज़्यादा कर रहा होगा? यह एक किताब है जो आपको ऐसी चौंका देने वाली अनेक अन्य बातें बताने का वायदा करती है। मैं इसे कम से कम तीन बार पढ़ चुकी हूँ। और हर बार मुझे, यदि ज़्यादा नहीं तो, उतना ही मजा आया है।

इसकी एक खासियत है कि यह कुन्द, अंधेरी–सी प्रयोगशाला में, अटपटी बातें बुदबुदाते, चीज़ों को इधर–उधर करते, अपने में खोये–खोये (और उबाऊ) वैज्ञानिक की घिसी–पिटी छवि को तहस–नहस कर देती है। सच तो यह है कि इसको पढ़कर लगता है कि अपने भरपूर बुद्धि कौशल, हाजिर–जवाबी और जीवन की उमंग के कारण इससे ज़्यादा चमकते, मोहक व्यक्तित्व के धनी लोग बहुत अधिक नहीं हो सकते!

फाइनमैन के भूतपूर्व विद्यार्थी अल्बर्ट आर हिब्ज़ ने अपनी सारगर्भित भूमिका में पुस्तक के मुख्य तत्व को इस तरह व्यक्त किया है: 'वे हमसे भौतिक शास्त्र की बात करते थे, उनके चित्र और समीकरण हमें उनकी समझ में साझेदार बनने में मदद करते थे। उनके होंठों पर मुस्कान और आँखों में चमक का कारण कोई गुप्त चुटकुला न होकर भौतिक शास्त्र ही होता था। भौतिकी का आनन्द! वह आनन्द संक्रामक होता था। हम सौभाग्यशाली हैं कि हमने उस संक्रमण को ग्रहण किया। अब फाइनमैन की शैली में जीवन के आनन्द से रूबरू होने का यहाँ आपके लिए एक अवसर है।'

हाँ, जीवन का आनन्द, आपको भी सराबोर करता है जब आप यह किताब पढ़ते हैं। हर बार जब भी मैं यह किताब पढ़ने बैठी हूँ तो फिर अपनी मेज़ से ऊर्जा से भरी हुई उठी हूँ।

बालक की तरह, भविष्य के इस नोबल पुरुस्कार विजेता के व्यक्तित्व का सबसे उल्लेखनीय पहलू था, उसके आसपास की तमाम चीज़ों में उसकी दिलचस्पी, और उनमें से अधिकांश की जाँच–पड़ताल करने की उसकी असीम ऊर्जा। उदाहरण के लिए, उसे रेडियो सुनते–सुनते सो जाना प्रिय था। इस बात ने उसे अपना खुद का रेडियो बनाने के लिए प्रेरित किया। एक दिन उसने चकित होकर पाया कि वह स्केनेकटाडी से प्रसारित हो रहे एक रेडियो चैनल को न्यूयॉर्क में (जहाँ वह रहता था) प्रसारित होने से एक घण्टा पहले पकड़ सकता था। अतः इस शरारती लड़के ने अपने दोस्तों को ऐसा दर्शाया कि जैसे उसमें भविष्य बताने की शक्तियाँ थीं। जब वे लेटे हुए कोई रेडियो नाटक सुन रहे होते, तो वह चमत्कारी ढंग से अगले दृश्य का अनुमान लगा लेता! खैर, एक चीज़ से दूसरी चीज़ का सिलसिला चल पड़ा (और यह इस मज़ेदार किताब में हर समय होता ही रहता है।) और फाइनमैन मौहल्ले का रेडियो मिस्त्री बन गया। हालाँकि अभी वह लड़का ही था। लोग हमेशा उसे अपना रेडियो सुधारने के लिए बुलाते रहते थे और चकित होते थे कि कैसे वह सिर्फ सोचकर उन्हें सुधार देता था।

> *जब मैं ग्यारह या बारह साल का था तब मैंने अपने घर में एक प्रयोगशाला बनाई। वह एक लकड़ी के खोके में थी जिसमें मैंने पटिये लगाकर कुछ खण्ड बना लिए थे। मेरे पास एक बिजली का चूल्हा था जिस पर मैं हर समय चिकनाई में फ्रेंच फ्राइड आलू (तले हुए आलू के छोटी पतली डण्डी जैसे टुकड़े) तलता रहता था।*
>
> *– रिचर्ड फाइनमैन*

उनके ही शब्दों में: एक बार जब मैं किसी पहेली में उलझता हूँ तो उसे छोड़ नहीं सकता। फाइनमैन इसे अपनी पहेली हल करने की लगन कहते हैं। वे किसी भी उलझन को सुलझाने का मोह नहीं छोड़ पाते थे। चाहे वह माया लोगों की चित्रलिपि हो, या तिजोरियों को खोलने की कोशिश हो, या फिर कोई ज्यामितीय पहेली हो (जो एक बड़े विद्यार्थी ने आगे की गणित की कक्षा से लाकर उसे दी थी)! हाईस्कूल के दौरान मनुष्य को ज्ञात हर पहेली मेरे पास आई होगी। मैं कम्बख्त हर विचित्र पहेली जानता था जिसका लोगों ने आविष्कार किया था।

यदि आप किसी ऐसी किताब की कल्पना कर सकते हैं जिसे पढ़ते हुए आपको उसके रचने वाले दिमाग की हरकत सुनाई देती हो, तो यही वह किताब है। इसमें लेखक का दिमाग किसी हैलीकॉप्टर की तरह तेजी से घनघनाते हुए घूमता हुआ, एक समस्या से दूसरी की ओर उड़ता रहता है। फिर जो उसे रुचती है उस पर मोहक अदा से उतरता है, और उस पर तब तक घूमता रहता है जब तक कि वह सुलझ नहीं जाती। फिर अगली समस्या की ओर उड़ जाता है, चाहे उसका पिछली से कोई भी सम्बन्ध न हो।

ऐसी विलक्षण प्रतिभा के इतने निकट सम्पर्क में आ पाने के ऐसे अवसर सचमुच में दुर्लभ हैं।

जब उसके सामने समय–सीमा से बँधी हुई कोई ऐसी समस्या होती, जिसे दिए गए सीमित समय में पारम्परिक ढंग से हल करना कतई सम्भव नहीं होता, तो फाइनमैन

अपने आप से पूछता: क्या इसे देखने का कोई और तरीका है? यह प्रश्न मेरे मन पर विशेष छाप छोड़ गया। बँधे-बँधाये ढाँचे के बक्से में सोचने के ढंग से बाहर निकलने

को लगाई गई इस छलाँग के पीछे इस लड़के के आत्मविश्वास के साथ वह परम आनन्द भी झलकता है जो उसे पहेलियाँ सुलझाने में मिलता था। अधिकांश सामान्य लोग ऐसी समस्या को सीधे-सीधे ढंग से इतने कम समय में हल करने की कोई सम्भावना न देखकर एकदम इतने असहाय हो जाएँगे कि उन्हें कुछ और सूझेगा ही नहीं।

मन में एक सवाल उठता है कि किसी विलक्षण व्यक्ति के मन में और आम आदमी के मन में, क्या यही भेद है?

लम्बी फब्तियाँ काटने, आलू कतरने या डैस्क क्लर्क की तरह टेलीफोन का उत्तर देने में: फाइनमैन ने हर ऐसे छोटे-मोटे काम में कुछ परिष्कार करने की कोशिश की, ताकि उसे अधिक सक्षमता से किया जा सके। अपनी चौंधिया देने वाली सूझों के बावजूद, फाइनमैन स्वीकार करता है कि: मैंने जाना कि असली दुनिया में कुछ नया करना बहुत कठिन काम है। पर जाहिर है कि इससे हताश होकर उसने कोशिश करना नहीं छोड़ा। फाइनमैन जब बालक था, तब उसके पिता और वह साथ-साथ पक्षियों का अवलोकन करते थे। आहिस्ता-आहिस्ता जिस तरह उसे ध्यान से निरीक्षण करना सिखाया गया – न कि सिर्फ चिड़िया का नाम बताकर आगे बढ़ जाना –

> 'वह चिड़िया देखते हो?', मेरे पिता कहते। 'यह स्पैन्सर्स वार्बलर है।' (मैं जानता था कि उन्हें उसका असली नाम मालूम नहीं था।) 'अच्छा, इटैलियन में यह चुट्टो लैपिट्टिडा है। पोर्तुगीज में यह बोम डा पीडा है। चीनी में यह चुंग-लाँग-टाह है, और जापानी में यह कतानो टाकेडा है। तुम पक्षी का नाम संसार की सारी भाषाओं में जान सकते हो, पर यह कर चुकने के बाद भी तुम पक्षी के बारे में कुछ भी नहीं जानोगे, तुम सिर्फ अलग-अलग जगहों के बारे में जानोगे और वे शब्द जानोगे जिनसे वहाँ के मनुष्य इसे पकारते हैं। इसलिए चलो हम पक्षियों को निहारें और देखें कि वे क्या कर रहे हैं उसी का महत्व है!'
>
> – रिचर्ड फाइनमैन, यह बताते हुए कि कैसे उनके पिता और वे साथ-साथ पक्षियों को देखते थे।

वह बहुत आँखें खोलने वाला है। सम्बन्धित अंश बॉक्स में उद्धृत किया गया है पुस्तक का सबसे सुन्दर अंश उस प्रयोग का वर्णन है, जो उन्होंने प्रिंस्टन विश्वविद्यालय के छात्रावास में रहने के दौरान चींटियों के साथ किया था। यह पढ़ने में बहुत रोचक है। यह, यह भी स्पष्ट करता है (ऐसे ढंग से जैसा शायद किताब की कोई और कहानी नहीं करती) कि कैसे वैज्ञानिक तरीका, किसी साधारण रोज़मर्रा की समस्या में इस्तेमाल किए जाने पर, उसे सुलझाने में मदद कर सकता है।

यह कहना शायद उचित होगा कि आप

- बहुत भाग्यशाली हैं, यदि आपने फाइनमैन के भौतिकी पर व्याख्यानों को आमने-सामने सुना है।
- कुछ कम भाग्यशाली हैं, यदि आपने फाइनमैन के भौतिकी पर व्याख्यानों को पढ़ा है।
- थोड़े अभागे हैं, अगर आपने केवल उनका जीवनवृत्त पढ़ा है, और
- एकदम अभागे हैं, अगर आपने उनका जीवनवृत्त भी नहीं पढ़ा है!

इसलिए, इंतजार मत कीजिए। उठाइए एक प्रति और शुरू हो जाइए!

नीरजा राघवन, उनसे इस पते पर सम्पर्क किया जा सकता है : neeraja@azimpremjifoundation.org